Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UPSC – CSE

सिविल सेवा परीक्षा

संघ लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन

पेपर I – भाग – 1

कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

IAS

पेपर 1 भाग 1

कला एवं संस्कृति

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**संस्कृति** • अर्थ • संस्कृति की अवधारणा • संस्कृति की विशेषताएँ • संस्कृति और विरासत • संस्कृति का महत्व • संस्कृतिओ के अध्ययन का महत्व • संस्कृति (culture) एवं सभ्यता (Civilisation) • संस्कृति एवं सभ्यता में अंतर • भारतीय संस्कृति की विशेषताएं	1
2.	**वास्तुकला** • पाषाण काल • हड़प्पा सभ्यता ○ रास्ते ○ नालियाँ ○ घर ○ कुएँ • गुफाएं : ○ एलोरा गुफाएं, महाराष्ट्र ○ एलीफेंटा गुफाएं ○ बादामी गुफाएं(कर्नाटक) 23 • मंदिर वास्तुकला ○ हिंदू मंदिर की बुनियादी संरचना ○ मंदिर स्थापत्य में भग्न ज्यामिति का प्रयोग ○ मंदिर वास्तुकला के चरण ○ मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ ○ भारत में सूर्य मंदिर ○ पहाड़ियों में मंदिर की वास्तुकला ○ जैन मंदिर वास्तुकला • भारतीय मंदिर वास्तुकला का अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव • स्तूप स्थापत्य ○ स्तूपों के भाग ○ स्तूपों के प्रकार ○ स्तूपों का दर्शन ○ स्तूपों का उदभव एवं विकास ○ मौर्यकालीन स्तूप	4

	• गुफा वास्तुकला
	  ○ मौर्य गुफाएं (तीसरी ईसा पूर्व पहली ईसवी)
	  ○ मौर्योत्तर गुफाएं (पहली सीई चौथी सीई)
	  ○ गुप्त काल की महत्त्वपूर्ण गुफाएँ
	  ○ राष्ट्रकूट और अन्य (6ठी 15वीं शताब्दी सीई)
	• महलों और किलों की वास्तुकला
	• इंडो इस्लामिक वास्तुकला
	  ○ दिल्ली सलतन काल
	• प्रांतीय वास्तुकला
	  ○ बंगाल शैली (1203 1573 ई.)
	  ○ जौनपुर शैली (1394 1479 ई.)
	  ○ मालवा स्कूल (1405 1569 ई.)
	  ○ बीजापुर
	  ○ गोलकुंडा
	  ○ मुगल स्थापत्य कला
	• उत्तर मुगल क्षेत्रीय वास्तुकला
	  ○ कश्मीर वास्तुकला
	  ○ इस्लामी शासन के तहत स्थापत्य विकास
	  ○ कश्मीर में उद्यान
	• असम वास्तुकला
	• बांगला वास्तुकला
	• डक्कन वास्तुकला
	  ○ बीदर
	  ○ गोलकुंडा
	  ○ अहमदनगर
	• मराठा वास्तुकला
	  ○ मंदिर वास्तुकला
	  ○ वाड़ा (महल)
	• राजपूत वास्तुकला
	  ○ शहर
	• औपनिवेशिक वास्तुकला
	  ○ भारत में औपनिवेशिक वास्तुकला की विशेषताएं
	  ○ इबेरियन/पुर्तगाली वास्तुकला
	  ○ इबेरियन शैली की विशेषताएं
	• गोथिक वास्तुकला
	• इंडो सरसेनिक शैली
	• फ्रेंच शैली की वास्तुकला
	• नव रोमन वास्तुकला
	• स्वतंत्रयोत्तर वास्तुकला
	  ○ ली कार्बुज़ियर
	  ○ स्थापत्य विरासत का संरक्षण
	  ○ यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल	

3.	**मूर्तिकला और कलाकृतियाँ** • मूर्तिकला का विकास • कांस्य युग की मूर्ति	**56**

	• मौर्य पूर्व कला
	• मौर्य काल की कला
	• शुंग काल की कला (180 80 ईसा पूर्व)
	• गुप्त काल
	• मध्यकालीन, 600 ईस्वी से आगे का काल
	• प्रारंभिक आधुनिक काल (1206 1858)
	• ब्रिटिश औपनिवेशिक काल (1858 1947)
	• स्वतंत्रता के बाद (1947 वर्तमान)
	• सिंधु घाटी सभ्यता मूर्तिकला
	  ○ कांस्य मूर्तियाँ
	  ○ टेराकोटा की मूर्तियाँ
	  ○ सील
	  ○ आभूषण
	• मौर्यकालीन मूर्तिकला कला
	  ○ स्तम्भ
	  ○ अशोक के शिलालेख
	• मौर्योत्तर काल
	  ○ मौर्योत्तर काल में मूर्ति कला :
	• भारतीय मूर्तिकला के स्कूल
	  ○ गांधार कला
	  ○ मथुरा कला (आरंभ पहली सदी ई० में)
	  ○ अमरावती मूर्ती कला
	• गुप्त कालीन मूर्ति कला
	• पाल और चंदेल मूर्तियां
	  ○ पाल मूर्तियां
	  ○ खजुराहो की मूर्तियां
	• दक्षिण भारत में मूर्तियां
	  ○ पल्लव
	  ○ चोल मूर्तिकला
	  ○ विजयनगर
	• भारत में महत्वपूर्ण शिलालेख		

4.	**भारत में मृद्भांड** • मध्यपाषाण मृदभांड • नवपाषाण युग • सिंधु घाटी सभ्यता के मृदभांड • गैरिक मृदभांड • कृष्ण लोहित मृद्पात्र • ब्लैक ऑन रेड वेयर • चित्रित धूसर मृदभांड • मौर्यकालीन मृद्भांड • लाल मार्जित मृद्भांड/ रेड पोलिश्ड वेयर (गुजरात) • तुर्क मुगल काल • ब्लू पॉटरी	**74**	
5.	**भारत में सिक्के**	**77**	

	• पंच मार्क या आहत चिह्नित सिक्के ○ विभिन्न महाजनपदों द्वारा जारी किए गए पंच मार्क सिक्के ○ मौर्य काल (322 185 ईसा पूर्व) के दौरान चिह्नित सिक्के • इंडो यूनानी सिक्के • सातवाहन द्वारा जारी किये गये सिक्के • क्षत्रप या इंडो सीथियन • गुप्त काल के सिक्के • वर्धन राजवंश के सिक्के • चालुक्य राजाओं द्वारा जारी किए गए सिक्के • राजपूत राजवंशों द्वारा जारी किए गए सिक्के • पांडय और चोल राजवंश के सिक्के • तुर्की और दिल्ली सल्तनत के सिक्के • विजयनगर साम्राज्य के सिक्के • मुगल कालीन सिक्के	
6.	**चित्रकला** • प्रागैतिहासिक चित्रकला ○ उत्तर पुरापाषाण काल (40,000 10,000 वर्ष पूर्व) ○ मध्यपाषाण काल (10,000 4000 ईसा पूर्व ○ ताम्रपाषाणकालीन चित्रकला • दक्षिण भारत • भीमबेटका • प्राचीन चित्रकला ○ अजंता की गुफाए ○ एलोरा गुफाएं ○ बाघ की चित्रकला ○ अर्मामलई गुफा, वेल्लोर, तमिलनाडु ○ लेपाक्षी, आंध्र प्रदेश ○ जोगीमारा गुफा और सीताबेंगरा गुफाएं, छत्तीसगढ़ ○ रावण छाया, उड़ीसा ○ बादामी गुफा मंदिर, कर्नाटक ○ सित्तनवासल गुफाएँ ○ तंजौर की चित्रकला • मध्यकालीन / लघु चित्र ○ अपभ्रंश /गुजरात /चालुक्य चित्र कला ○ पाल चित्र कला ○ सल्तनतकालीन चित्रकला ○ मुगल काल ○ मुगल चित्रकला का विवरण ○ दक्कनी चित्रकला • चित्रकला के क्षेत्रीय स्कूल ○ राजस्थानी चित्रकला ○ पहाडी चित्रकला ○ बसोहली शिअली ○ जम्मू या डोगरा स्कूल • दक्षिण भारतीय शैली	**81**

	○ तंजावुर शैली 108 ○ मैसूर शैली 108 • लोक चित्र कला • आधुनिक काल ○ कम्पनी कलम (Kampani Kalam) /पटना शैली ○ पुनर्जागरण एवं बंगाल शैली : ○ समसामायिक चित्रकला प्रमुख आधुनिक चित्रकार ○ प्रगतिशील कला समूह, बॉम्बे ○ चित्रकला की क्यूबिस्ट शैली	
7.	**धर्म** • हिंदू धर्म: ○ विकास एवं प्रमुख लक्षण ○ हिंदू धर्म का साहित्य या ग्रंथ ○ हिंदू धर्म के तहत संप्रदाय • जैन धर्म ○ महावीर स्वामी ○ जैन धर्म के सिद्धांत ○ जैन धर्म की शाखाएं ○ जैन साहित्य • बौद्ध धर्म ○ भगवान बुद्ध ○ बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ तथा सिद्धांत ○ बौद्ध सम्प्रदाय • ईसाई धर्म: ○ ईसाई धर्म की शिक्षाएं इस प्रकार है ○ ईसाई धर्म के समुदाय ○ बाइबिल • सिख धर्म: ○ 10 सिख गुरु • यहूदी धर्म • पारसी धर्म • इस्लाम धर्म: • ताओ धर्म • छः नास्तिक संप्रदाय	**103**
8.	**दर्शन** • आस्तिक या रूढ़िवादी स्कूल ○ सांख्य दर्शन 128 ○ योग 128 ○ न्याय 129 ○ वैशेषिक दर्शन 129 ○ मीमांसा दर्शन 129 ○ वेदांत दर्शन 129 • नास्तिक या हेटेरोडॉक्स स्कूल	**116**

	○ जैन ○ बौद्ध दर्शन ○ आजीवक ○ चार्वाक दर्शन	
9.	**भारत में भाषाएँ** • भारत के भाषायी परिवार ○ हिंद आर्य भाषा परिवार ○ द्रविड़ भाषा परिवार ○ ऑस्ट्रो एशियाटिक भाषा परिवार ○ चीनी तिब्बती भाषा परिवार • भारत की प्राचीन लिपियां ○ सिंधु लिपि ○ ब्राह्मी लिपि ○ खरोष्ठी लिपि ○ कुटिल लिपि ○ देवनागरी लिपि ○ शारदा लिपि ○ गुरुमुखी लिपि ○ तेलुगू एवं कन्नड़ लिपि ○ तमिल मलयालम लिपि ○ शाहमुखी लिपि ○ मोडी लिपि ○ कदंब लिपी ○ वत्तेलुट्टू लिपि ○ गुप्त लिपि • शास्त्रीय भाषा • भारत की आधिकारिक भाषाएं	**122**
10.	**साहित्य** • साहित्य का विकास • संस्कृत साहित्य ○ संस्कृत धार्मिक साहित्य ○ वेद ○ ब्राह्मण • आरण्यक (वन ग्रंथ) • उपनिषद ○ संस्कृत महाकाव्य • रामायण • महाभारत: ○ पुराण ○ धर्मनिरपेक्ष संस्कृत साहित्य • पाली और प्राकृत साहित्य ○ पाली ○ प्राकृत • द्रविड़ साहित्य	**129**

	○ संगम (तमिल) साहित्य ○ कन्नड़ साहित्य ○ तेलुगु साहित्य ○ मलयालम साहित्य • क्षेत्रीय साहित्य ○ बंगाली साहित्य ○ असमिया साहित्य ○ उड़िया साहित्य ○ गुजराती साहित्य ○ राजस्थानी साहित्य ○ कश्मीरी साहित्य ○ पंजाबी साहित्य ○ मराठी साहित्य • उर्दू साहित्य • फारसी साहित्य • हिंदी साहित्य • यात्रा वृतांत • आधुनिक साहित्य • दलित साहित्य		
11.	**भारतीय संगीत** • भारतीय संगीत के घटक • भारतीय संगीत का वर्गीकरण • शास्त्रीय शैली – ○ हिन्दूस्तानी शैली ○ हिन्दुस्तान संगीत की महत्व पूर्ण गायन शैलियाँ ○ प्रमुख व्यक्ति ○ कर्नाटक संगीत ○ कर्नाटक संगीत के रूप • हिंदुस्तानी और कर्नाटक शैली के बीच समानताएं ○ हिंदुस्तानी बनाम कर्नाटक शैली ○ कर्नाटक संगीत के गायक • लोक संगीत ○ प्रमुख भारतीय लोक संगीत: ○ देश की अन्य प्रमुख लोक परंपराएं: • शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत का मिश्रण (फ्यूज़न संगीत) ○ भजन ○ शबद ○ कव्वाली ○ रवीन्द्र संगीत ○ गण संगीत ○ हवेली संगीत • संगीत में आधुनिक विकास ○ गंधर्व महाविद्यालय ○ प्रयाग संगीत समिति ○ संगीत नाटक अकादमी	**146**	

	○ मैरिस कॉलेज ऑफ़ म्यूजिक ○ SPIC MACAY ("युवाओं के बीच भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सोसायटी") • संगीत वाद्ययंत्र ○ अवनद्ध वाद्य ○ घाना वाद्य / इडियोफ़ोन ○ सुषिर वाद्य/एयरोफोन वायु वाद्य यंत्र ○ तत् वाद्य या कॉर्डोफोन तार वाले वाद्य यंत्र	
12.	**नृत्य** • शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न शैलियाँ ○ भरतनाट्यम ○ कुचिपुड़ी ○ ओडिसी ○ कथकली ○ मोहिनीअट्टम(केरल) ○ मणिपुरी ○ कथक ○ सत्रीया /सतरिया (असम) ○ यक्षगान • लोक नृत्य ○ प्रमुख क्षेत्रो के प्रमुख नृत्य ○ सामूहिक नृत्य ○ फसल कटाई के नृत्य ○ ऋतु नृत्य ○ मार्शल आर्ट (युद्ध नृत्य) ○ पारम्परिक नृत्य • नृत्य का महत्व	**168**
13.	**हिन्दी रंगमंच** • प्राचीन भारतीय महत्वपूर्ण नाटकशास्त्र • लोक रंगमंच ○ अनुष्ठान रंगमंच ○ मनोरंजन का रंगमंच ○ 3.दक्षिण भारत के थिएटर ○ आधुनिक काल के नाटक/ रंगमंच ○ प्रमुख आधुनिक नाटककार • रंगमंच का प्रचार, संरक्षण और व्यावसायीकरण • व्यक्तित्व और संस्थान	**178**
14.	**भारतीय कठपुतली कला** • धागा कठपुतली ○ कठपुतली, राजस्थान ○ कंढेई, उड़ीसा ○ गोम्बेयाट्टा, कर्नाटक ○ बोम्मलाट्टम, तमिलनाडु • छाया कठपुतलियां ○ तोगालु गोम्बेयाट्टा, कर्नाटक	**187**

	○ थोलू बोम्मलाटा, आंध्र प्रदेश ○ रावण छाया, उड़ीसा ○ थोलपावकूथु, केरल • दस्ताना कठपुतली ○ पावाकूथु, केरल • छड कठपुतली ○ यमपुरी, बिहार ○ पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल ○ काठी कांधे, उड़ीसा • कठपुतली का प्रचार, संरक्षण और व्यावसायीकरण	
15.	**विज्ञान एवं तकनीक** • वास्तुकला के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी • गणित ○ आर्यभट्ट ○ ब्रह्मगुप्त ○ भास्कराचार्य ○ श्रीनिवास रामानुजन • रसायन विज्ञान ○ नागार्जुन ○ टीपू सुल्तान ○ मुगल • चिकित्सा ○ चरक संहिता ○ सुश्रुत संहिता ○ सारंग देव • चिकित्सा प्रणाली ○ आयुर्वेद ○ सिद्ध ○ सोवा रिग्पा ○ यूनानी चिकित्सा ○ योग ○ होम्योपैथी • खगोल ○ आर्यभट्ट ○ वराहमिहिर ○ फिरोज शाह तुगलक ○ महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ○ फिरोज शाह बहमनी	**192**
16.	**भारत में मार्शल आर्ट** • कलारिपयट्टू • सिलंबम • थांग टा और सरित सरक • चेइबी गद गा • परी खंडा • तोडा	**199**

	• गटका • मर्दानी खेल • लाठी • इनबुआन कुश्ती • कुट्टू वरिसाई • मल्लखंब • मुष्टि युद्ध	
17.	**मेले एवं त्यौहार** • महत्वपूर्ण मेले • भारत में फसल उत्सव • भारत में नए साल के त्यौहार • धर्मनिरपेक्ष त्यौहार • उत्तर पूर्व के त्यौहार • राष्ट्रीय त्यौहार	**202**
18.	**भारतीय सिनेमा** • भारतीय सिनेमा का विकास • क्षेत्रीय सिनेमा • भारतीय छायांकन(सिनेमेटोग्राफी)अधिनियम 1952 • केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी)	**209**
19.	**कलारूप** • टाई और डाई • हाथी दांत की नक्काशी • लकड़ी का काम • मिट्टी और मिट्टी के बर्तनों का कार्य • चमड़ा उत्पाद • खिलौने ○ भारत के स्वदेशी खिलौने • फर्श की सजावट • रंगोली • धातु शिल्प • कांच की बनी वस्तुएँ	**211**
20.	**संस्थाएं** • UNESCO • भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण • इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) • अखिल भारतीय रेडियो • नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय • भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार • भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद • कला और सांस्कृतिक विरासत के लिए भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट (INTACH) • राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय • ललित कला अकादमी • साहित्य अकादमी (राष्ट्रीय पत्रों की अकादमी)	**224**

	• संगीत नाटक अकादमी • सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र	
21.	**सरकारी कानून और संस्कृति** • भारतीय खजाना निधि अधिनियम, 1878 • प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904 • पुरावशेष (निर्यात नियंत्रण) अधिनियम, 1947 • प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारक और पुरातत्व स्थल और अवशेष (राष्ट्रीय महत्व की घोषणा) अधिनियम, 1951 • पुरावशेष और कला निधि अधिनियम, 1972 • सार्वजनिक अभिलेख अधिनियम, 1993	**230**
22.	**पुरस्कार और सम्मान** • भारत रत्न • पद्म पुरस्कार • साहित्य अकादमी पुरस्कार • राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार • अन्य साहित्यिक पुरस्कार	**234**
23.	**महत्वपूर्ण व्यक्तित्व**	**240**
24.	**भारत के महत्वपूर्ण प्राचीन विश्वविद्यालय**	**245**
25.	**भारत में महत्वपूर्ण मठ**	**247**

1
CHAPTER

संस्कृति

- किसी देश के **सांस्कृतिक मूल्य** एवं **परम्पराएँ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष** रूप से उस देश की **भौगोलिक** एवं **जलवायविक दशाओं** से **प्रभावित** होती है क्योंकि इस पृष्ठभूमि में ही उस देश का **सामाजिक**, **आर्थिक**, **राजनीतिक**, **धार्मिक** एवं **सांस्कृतिक ढाँचा** निर्मित होता है।
- इसके अतिरिक्त उस देश के निवासियों का **चिंतन**, **रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान, नृत्य, त्योहार** एवं **परम्पराओं** से भी **प्रभावित** होता है।
- औद्योगिक क्रांति के बाद विकसित **भौतिक समृद्धि** से उत्पन्न **वैज्ञानिक** एवं **तकनीकि प्रगति** और **सूचना** एंव **संचार** ने सभी देशों के **सांस्कृतिक मूल्य को गहरे रूप से प्रभावित** किया है।

अर्थ

- **संस्कृति -** किसी समाज में निहित **उच्चतम मूल्य** की **चेतना**, जिसके अनुसार वह समाज अपने जीवन को ढालता है।
  - संस्कृत भाषा की **धातु 'कृ'** (करना) से बना है, जिसका **अर्थ** है **परिष्कृत स्थिति।**
  - अर्थात् जब **प्रकृत/ कच्चे संसाधन को परिष्कृत** किया जाता है तो वह **संस्कृति** हिस्सा बन जाता है।
  - अंग्रेजी शब्द **'कल्चर'** लैटिन भाषा के **'कल्ट या कल्टस'** से लिया गया है जिसका अर्थ है विकसित या **परिष्कृत करना।**
  - संक्षेप में किसी वस्तु को इस हद तक **संस्कारित और परिष्कृत करना** कि इसका **अंतिम उत्पाद** हमारी **प्रशंसा** और **सम्मान** प्राप्त कर सके।

Unleash the topper in you

संस्कृति की अवधारणा

- संस्कृति **जीवन की विधि** है, जो **भोजन** हम खाते हैं, जो **कपड़े** हम पहनते हैं, जो **भाषा** हम बोलते हैं और जिस **भगवान** की हम पूजा करते हैं, ये सभी **संस्कृति** के **पक्ष** है।
- अतः एक **सामाजिक वर्ग** के सदस्य के रूप में **मानवों** की सभी उपलब्धियाँ **संस्कृति** कही जा सकती है, **उदाहरण** कला, संगीत, साहित्य, शिल्पकला, धर्म, दर्शन आदि।
- इस प्रकार संस्कृति, **मानव जनित पर्यावरण** से संबंध रखती है जिसमें सभी **भौतिक और अभौतिक उत्पाद एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी** को **स्थानांतरित** किये जाते हैं।
- संस्कृति, मानव के **शारीरिक** तथा **मानसिक संस्कारों का सूचक** है अर्थात् संस्कृति मानव समाज के संस्कारों का **परिष्कार** और **परिमार्जन** है जो कि एक **सतत प्रक्रिया** है।
- दूसरे शब्दों में मनुष्य के लिए जो **वांछनीय** अर्थात् मंगलमय है वह **संस्कृति का अंग** है।
- संस्कृति का एक अर्थ **अत:करण की शुद्धि** और **सहदयता** भी है

संस्कृति की विशेषताएँ

- संस्कृति हमारी **प्रकृति की अभिव्यक्ति** है।
- यह हमारे **साहित्य** में, **धार्मिक** कार्यों में, **मनोरंजन** एवं आनन्द प्राप्त करने के तरीकों में देखी जा सकती है।
- **भौतिक** एवं **अभौतिक** रूप में संस्कृति **मानव जनित पर्यावरण** से **संबंध** रखती है।
- भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी है जो हमारे **जीवन के भौतिक पक्षों से जुड़ाव** रखती है, जैसे हमारी वेश-भूषा, खान-पान व घरेलू वस्तुएँ आदि।
- **अभौतिक-संस्कृति** का संबंध **विचारों**, **आदर्शों**, **भावनाओं** और **विश्वासों** से है।

- **संस्कृति** एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक देश से दूसरे देश में **बदलती रहती** है।
    - इसका विकास एक **स्थानीय**, **क्षेत्रीय** अथवा **राष्ट्रीय** संदर्भ में विद्यमान **ऐतिहासिक प्रक्रिया** पर आधारित होता है।
    - **उदाहरण -** देश के विभिन्न हिस्सों में अभिवादन की विधियों में, हमारे वस्त्रों में, खाने की आदतों में, सामाजिक एवं धार्मिक रीति रिवाजों और मान्यताओं में भिन्नता है।
- संस्कृति **आंतरिक अनुभूति** से **सम्बद्ध** है जिसमें **मन** और **हृदय** की **पवित्रता निहित** है
- इसमें **कला**, **विज्ञान**, **संगीत**, **नृत्य** और **मानव जीवन** की **उच्चतर उपलब्धियाँ** सम्मिलित है, जिन्हें **सांस्कृतिक गतिविधियाँ** कहा जाता है।

संस्कृति और विरासत

- पूर्ववर्तियों से हमें जो **संस्कृति विरासत में** मिली है, उसे सांस्कृतिक विरासत या राष्ट्रीय विरासत, मानव विरासत आदि कहा जाता है।
- **संस्कृति बदल सकती** है, लेकिन **विरासत नहीं।**

संस्कृति का महत्व

- सत्य के **तीन शाश्वत मूल्य, सत्य** (दर्शन और धर्म), **सौंदर्य** (कला और वास्तुकला) और **अच्छाई** (नैतिकता और प्रेम, सहिष्णुता के मूल्य) संस्कृति से जुड़े हुए हैं
- **सामूहिक ज्ञान** वह है जो हमें **मानव बनाता** है और इसे **अंतर** और **अंतः पीढ़ियों** (संस्कृति) के बीच **साझा** किया जा रहा है

संस्कृतिओ के अध्ययन का महत्व

1. **व्यक्ति की दृष्टि से महत्व -**
    - किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण **खान-पान, व्यवहार, वेश-भूषा, सोच एवं आदतों** द्वारा किया जाता है
    - संस्क्रति व्यक्ति का **नियमन एवं समाजीकरण का कार्य** करती हैं।
    - अत: व्यक्तियों को **समग्रता में जानने के लिए संस्कृति का अध्ययन अपरिहार्य** होता है।
2. **सामाजिक दृष्टि से महत्व**
    - संस्कृति का निर्माण मुख्यतः **सामाजिक प्रयासों की देन** है।
    - संस्कृतियाँ **समाजो** को **जोड़ने का कार्य** करती हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए अनेक तीज , त्यौहार ,मेलो, उत्सव आदि विकास हुआ है
    - प्रत्येक समाज अपनी **आवश्यकताओं** के **अनुरूप** संस्कृति के अनेक **तत्वों** जैसे -कला , धर्म, दर्शन विज्ञान, आचार-व्यवहार, परंपरा आदि **का निर्माण** करता है।
    - अत: **समाज** को **समझने** के लिए भी **संस्कृति** को **समझना** अत्यंत **महत्त्वपूर्ण** है।
3. **राष्ट्रीय द्रष्टि से महत्व**
    - संस्कृतिया **राष्ट्रीय पहचान** का **निर्धारण** करती हैं क्योंकि इसका **निर्माण** राष्ट्र के तहत आने वाले **निवासियों के सामूहिक योगदान** से होता है।
    - संस्कृतियाँ विभिन्न **राष्ट्रों को जोडने का भी कार्य** करता है।
    - भारत सहित विश्व में अनेक ऐसे देश है जिनकी संस्कृति का विस्तार राष्ट्रीय सीमा के बाहर तक है। अतः राष्ट्रीय दृष्टि से भी इसका **महत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण** है

संस्कृति (culture) एवं सभ्यता (Civilisation)

- संस्कृति एवं सभ्यता **एक दूसरे से सम्बंधित** अवधारणाएं है।
- इन दोनों शब्दो के अर्थ एवं व्यवहार को लेकर **विद्वानों के बीच आम राय नहीं** है।

- **संस्कृति**, मानव की विभिन्न पीढ़ियों द्वारा अर्जित **एक मानवीय पूँजी** हैं जिसके तहत धर्म, दर्शन, चिंतन , विचार कला , विज्ञान ,भाषा साहित्य, आचार, व्यवहार, रीति-रिवाज ,जीवन-शैली आदि आते हैं।
  - संस्कृतियों की जड़ में **मूल्य एवं आदर्श निहित** होते हैं।
- **सभ्यता** संस्कृति के **मानकीकरण** (Standardization) की एक विशेषता है।
  - **सांस्कृतिक यात्रा** के द्वारा **मानव** द्वारा जब एक **उन्नत तकनीकी स्तर** तथा **उच्च आर्थिक समृद्धि** को प्राप्त कर लिया जाता है तो उसे सभ्यता कहा आता है।
  - सभ्यता के अवस्था में **विचलन**(deviation) हो सकता है।
  - यही कारण है **सभ्यता का पतन** हो सकता है, **संस्कृतियों का नहीं**
    - **जैसे** - हडप्पा एवं मेसोपोटामिया की सम्यता आदि।

संस्कृति एवं सभ्यता में अंतर

सभ्यता में मनुष्य का भौतिक पक्ष प्रधान होता है	संस्कृति में आचार, विचार की प्रधानता होती हैं
सभ्यता का विकास अल्पकाल में भी संभव हैं	संस्कृति का निर्माण लम्बी परम्परा के कारण होता हैं
सभ्यता की आधारशिला संस्कृति हैं पर सभ्यता में सुधार संभव हैं	संस्कृति की जड़ें गहरी व अपरिवर्तनशील होती हैं
सभ्यता शरीर और ब्राह्म व्यवहार को दर्शाती हैं	संस्कृति आत्मा और आंतरिक व्यवहार को दर्शाती हैं

भारतीय संस्कृति की विशेषताएं

- निरंतरता और परिवर्तन
- धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण
- सार्वभौमिकता (शांति, गुटनिरपेक्षता, विश्व बंधुत्व)
- विविधता और एकता
  - दुनिया के सभी प्रमुख धर्म यहां हैं
  - भूगोल और जलवायु
  - विदेशी प्रभाव (ईरानी, यूनानी, अरब, ब्रिटिश)
  - अलग-अलग जातियां
  - क्षेत्रीय परस्पर मेलजोल
  - विचारों को आत्मसात करने की उल्लेखनीय क्षमता
  - व्यापार, तीर्थयात्रा, सैन्य अभियान
  - भौतिकवादी और अध्यात्मवादी

2
CHAPTER

वास्तुकला

वास्तुकला कला और विज्ञान है जो **भवन** और **गैर-भवन संरचनाओं** के **डिजाइन** से **संबंधित** है। भारत में वास्तुकला **सिंधु घाटी सभ्यता से शुरू** हुई और मंदिरों, स्तूपों, शैल्कर्तित गुफाओं, महलों, किलों आदि जैसी विभिन्न **संरचनाओं का निर्माण** हुआ।

पाषाण काल

- भारत में **पाषाणकालीन मानवों द्वारा निर्मित** वास्तुकला का **उदाहरण नहीं** मिलता। महापाषाण काल के **लोगों द्वारा** उनके **कब्रिस्तानों** को **पत्थर** से **सजाने** का उदाहरण मिलता है।
- दक्षिण भारत में इस प्रकार **शवों** को **दफनाने** की **परम्परा लौह युग** के साथ आरंभ हुई।
- महापाषाण कालीन **दफन करने के उदाहरण** बड़ी संख्या में निम्न स्थानों जैसे **महाराष्ट्र** (नागपुर के पास) **कर्नाटक** (मास्की), **आंध्र प्रदेश** (नागार्जुनकोंडा), **तमिलनाडु** (आदिचन्नालुर) तथा **केरल** में पाये गये है।

हड़प्पा सभ्यता

- **पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार** पर, इस **संस्कृति** के फलने-फूलने की **चरम अवस्था 2100 ई.पू. से 1750 ई.पू.** के बीच अनुमानित है।
- मकानों के निर्माण में सामग्री की **उत्कृष्टता** तथा **दुर्ग**, **सभागारों**, अनाज के **गोदामों**, **कार्यशालाओं**, **छात्रावासों**, **बाजारों** आदि की **मौजूदगी** तथा **आधुनिक जल निकास प्रणाली** वाले **भव्य नगरों** के समान वैज्ञानिक **ले-आउट** देखकर यह **निष्कर्ष** निकाला जा सकता है कि उस काल की **संस्कृति** काफी **समृद्ध** थी।
- **हडप्पा** और **मोहनजोदड़ों** नामक **दोनों राजधानियाँ** उत्तम **नगरविन्यास** का **उदाहरण** हैं। वहाँ के **वास्तु विद्या** आचार्यों ने **दुर्ग** के रूप में उनका **विधान** किया।
- उनके **पुरविन्यास** में **परिखा**, **प्राकार**, **वप्र**, **द्वार**, **अट्टालक**, **महापथ**, **प्रसाद**, **कोष्ठागार**, **सभा**, , **वीथी**, **जलाशय** आदि वास्तु के अनेक स्थल प्राप्त हुए हैं।
- कोट के भीतर **नगर चौड़े महापथों से विभक्त** था जो चतुष्पथों के रूप में एक दूसरे से मिलते थे और फिर उनसे **कम चौड़ी रथ्याओं और वीथियों में बँट** जाते थे और समस्त पुर को कई **चौक** या **मुहल्लों** में **बाँटते** थे।
- पुरनिर्माण के आरम्भ में **वास्तु-विद्याचार्यों** ने उसका जैसा **विन्यास** किया था वह लगभग उसी रूप में एक **सहस्त्र वर्षों के अन्त तक** बना रहा।

रास्ते

- नगर का **मुख्य राजमार्ग 33 फीट चौड़ा** है।
- उस पर कई **गाड़ियाँ एक साथ** चल सकती हैं।
- **कम चौड़ी सड़के** 12 फीट से 9 फीट तक हैं। इसके बाद **4 फुट तक चौड़ी गलियाँ** भी हैं।
- **सड़कों** पर **ईट बिछाकर** उन्हें **पक्की** करने का **रिवाज** नहीं था।
- केवल **बीच** में बहने वाली **नालियों** को **ईंटों** से **पक्की बनाकर** ईटों से ही **ढंकते** थे।

घर

- घर प्रायः **एक सीध में** और **गलियों** की **ओर** बनाए जाते थे। उनकी **माप** प्राय: 27 फुट x 29 फुट या बड़ें घरों की इससे दुगुनी होती थी। उनमें कई **कमरे**, **रसोईघर**, **स्नानघर** और बीच में **आँगन** होता था और वे **दुखण्डे** बनाए जाते थे।

- कमरों में **फर्श पक्के** न थे, **केवल मिट्टी** कूटकर कच्चे रखे जाते थे।
- **स्नान** की **कोठरियों** में **पतली ईंटें** लगाकर फर्श में एकदम ऐसी जुड़ाई करते थे कि एक बूंद भी पानी न भरने पाये।
- मोटी दीवारों में **नल लगाकर नहाने धोने** का **पानी** नीचे उतार कर **सड़क की ओर** नालियों में बहा दिया जाता था। इससे होने वाली **स्वच्छता** जोकि **हड़प्पा संस्कृति** की **विशेषता** थी।
- प्रायः हर अच्छे घर में **मीठे पानी से भरा हुआ कुआँ** था।

कुएँ

- कुएँ के मुँह पर कुछ **ऊँची मुड़ेर** रहती थी जिसकी ऊपरी कोर पर रस्सी आने-जाने के निशान अभी तक बने हैं।
- वास्तुकाला की दृष्टि से **मोहनजोदड़ो** तथा **हड़प्पा** के **बड़े अन्नागार** भी **अद्‌भुद** है। पहले इसे **स्नानागार** का **ही एक भाग** माना जाता था।
- किन्तु **उत्खनन** के **पश्चात** यह ज्ञात हुआ है कि ये एक **विशाल अन्नागार** के **अवशेष** है।
- स्नानागार के निकट **पश्चिम** में **विद्यमान पक्की ईंटों** के विशाल चबूतरे पर **मोहनजोदड़ो** का **अन्नागार** निर्मित है, जिसकी पूर्व से पश्चिम की **लम्बाई 150 फीट** तथा उत्तर से दक्षिण की **चौड़ाई 75 फीट** है।

गुफाएं

- मौर्योत्तर काल में **दो प्रकार की शैल गुफाओं का विकास** देखा गया - **चैत्य** और **विहार।**
    - **विहार** का विकास **मौर्य सामाज्य के दौरान** हुआ था जबकि **चैत्य** कक्षों का विकास **मौर्योत्तर काल** के दौरान हुआ।
    - **चैत्य प्रार्थना** के उद्देश्य से बनाया गया एक **आयताकार प्रार्थना कक्ष** होता था जिसके **केंद्र** में **स्तूप** को रखा जाता था तथा **विहारों** का उपयोग **भिक्षुओं के निवास स्थल** के रूप में किया जाता था।
- **उदाहरण**: कार्ले का चैत्य, अजंता की गुफाएं, उदयगिरी और खंडगिरी की गुफाओं (ओडिशा) को कलिंग राजा खारवेल के द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था। ये हाथीगुंफा अभिलेख के लिए प्रसिद्ध हैं जिसे ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्णित किया गया था।

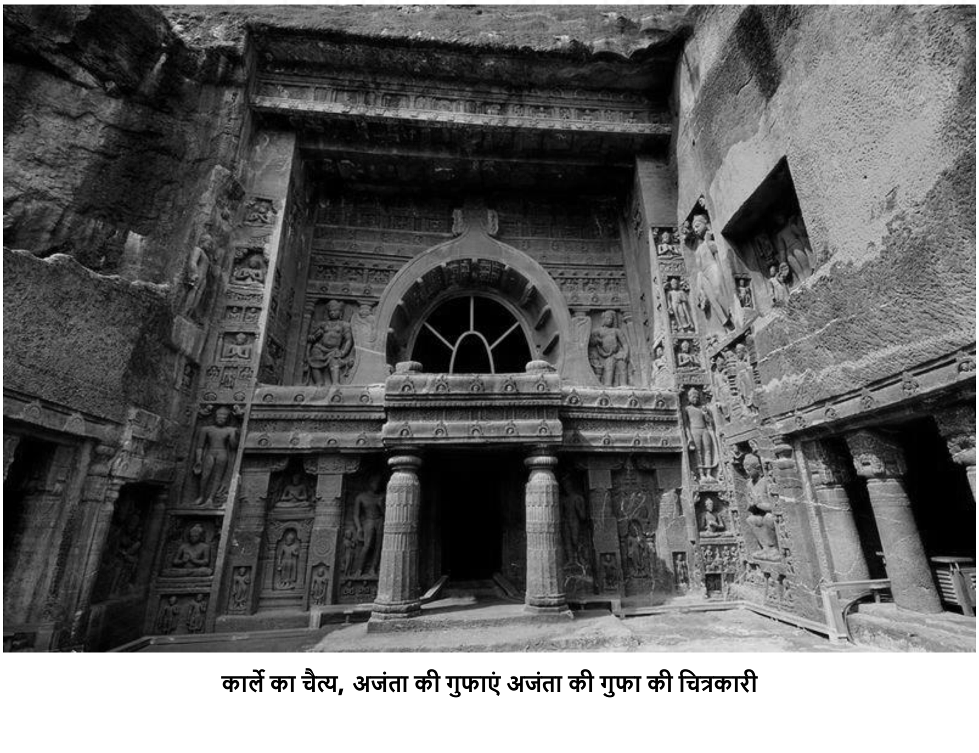

कार्ले का चैत्य, अजंता की गुफाएं अजंता की गुफा की चित्रकारी

- सतवाहन काल के दौरान, इन गुफाओं को **राजकीय संरक्षण** प्राप्त हुआ और ये **अधिक विस्तृत** और **अलंकृत** होते चले गए। द्वारों पर विभिन्न प्रकार के **मिथुन जोड़ों** को **उत्कीर्णित** किया गया। **बहुमंजिला गुफाएं तराशी** जानी शुरू की गई। कार्ले में **दो मंजिला विहार** और **अजंता** में **तीन मंजिला विहार** बनाए गए।

एलोरा गुफाएं, महाराष्ट्र

- यह महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में **अजंता** की गुफाओं से **लगभग 100 किलोमीटर दूर स्थित** है।
- **5वीं से 11वीं शताब्दी** के दौरान **निर्मित**
- **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल।**
- **34 गुफाएं - 1**7 हिंदू धर्म, 12 बौद्ध और 5 जैन।

एलीफेंटा गुफाएं

- मुंबई हार्बर में **एलीफेंटा या श्रीपुरी द्वीप** पर।
- **हाथी** की **विशाल आकृति** को देखकर पुर्तगालियों ने एलीफेंटा नाम दिया। **गर्भगृह** के **प्रवेश द्वार** पर **द्वारपालों** की **विशाल आकृतियाँ** हैं।

बादामी गुफाएं(कर्नाटक)

- **लाल बलुआ पत्थर** से निर्मित। इन गुफाओं में **तीन ब्राह्मणवादी** और एक **जैन** (पार्श्वनाथ) और एक **प्राकृतिक बौद्ध** गुफा है।
- भित्ति चित्रों में **गुफा चित्रकला** एक महत्वपूर्ण **विशेषता** है। ये **सबसे पहले ज्ञात हिंदू गुफा चित्र** हैं
- जीवित **भित्ति चित्रों** में **शिव** और **पार्वती** शामिल हैं। **पुराणों**, **महाभारत** आदि की **कहानियां चित्रित** हैं
  - गुफा को ,**विष्णु गुफा** के रूप में जाना जाता है क्योंकि गुफाओं में चित्रण **वैष्णव संबद्धता** को **दर्शाता** है
  - **चालुक्य** राजा, **मंगलेश** द्वारा **संरक्षित**
  - **गुफा संख्या 4** में शिलालेख **578-579 सीई** की तारीख का उल्लेख करता है, गुफा की सुंदरता का वर्णन करता है और इसमें **विष्णु** की **छवि** का **समर्पण** शामिल है।

जैन गुफाएँ	बौद्ध गुफाएँ
जैना गुफाओं को बलुआ पत्थर से तराशा गया था (तराशने के लिए आश्न लकिन मूर्तिकला के लिए मुश्किल)।	बौद्ध गुफाओं को कठोर चट्टानों से तराशा गया था (मूर्तिकला के लिए उपयुक्त)।
जैना गुफाओं में कोई सभा कक्ष या पत्थर से तराशे गए धार्मिक स्थल नहीं होते थे।	बौद्ध गुफाओं में सभा कक्ष और धार्मिक क्षेत्र होते थे।
जहाँ भी चट्टानों को काटा जा सकता था, जैन गुफाओं को वहाँ काटकर बनाया गया था, गुफाओं को काटने में कोई योजना नहीं होती थी।	बौद्ध गुफाओं को अच्छी तरीके से योजना बनाकर तराशा गया था।
जैना गुफाओं सरल तरीके से बनी होती थी और उनमे जैन भिक्षुओं के सन्यास की झलक दिखाई देती थी।	बौद्ध गुफाएँ विस्तृत तथा विशाल होती थी।

मंदिर वास्तुकला

- भारत में मंदिर वास्तुकला का विकास **गुप्त युग के दौरान चौथी** से **पांचवीं शताब्दी ईस्वी** में हुआ।
- पहले **हिंदू मंदिर शैल्कर्तित गुफाओं** से बनाए गए थे, जो **बौद्ध संरचनाओं** जैसे स्तूपों से **प्रभावित** थे।
- इस अवधि के दौरान, बड़े पैमाने पर **मुक्त खड़े मंदिरों का निर्माण** किया गया।
- **दशावतार** मंदिर (देवगढ़, झांसी) और **ईंट मंदिर** (भितरगांव, कानपुर) इस अवधि के दौरान बनाए गए मंदिरों के कुछ उदाहरण हैं।
- भारत में हिंदू मंदिरों के **स्थापत्य सिद्धांतों** का **वर्णन शिल्प शास्त्र में** किया गया है जिसमें तीन मुख्य प्रकार के मंदिर वास्तुकला का उल्लेख है - **नागर** शैली, **द्रविड़** शैली और **वेसर** या मिश्रित **शैली।**

हिंदू मंदिर की बुनियादी संरचना

- **गर्भगृह - मंदिर का हृदयस्थान**- मंदिर के अंदर मुख्य देवता के लिए बनाया गया है। पहले के दिनों में, इसका एक ही प्रवेश द्वार था जिसमे बाद में कई कक्षों विकसित हुए।
- **मंडप**- यह **मंदिर का प्रवेश द्वार** है जो बहुत बड़ा होता है जिसमें **बड़ी संख्या** में **उपासकों** के लिए **जगह** शामिल है। कुछ मंदिरों में **अर्धमंडप** (मंदिर के बाहर और एक मंडप के बीच एक संक्रमणकालीन क्षेत्र बनाने वाला प्रवेश द्वार) और **महामंडप** (मंदिर में मुख्य सभा हॉल जहां भक्त समारोहों और सामूहिक प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते हैं) नामक **विभिन्न आकारों** में कई **मंडप** होते हैं। ये **कुछ** ही **मंदिरों** में **मौजूद** हैं।
- **शिखर/विमान** - यह एक **पर्वत जैसा शिखर** है, जो **उत्तर भारत** में एक **घुमावदार शिखर** और **दक्षिण भारत** में एक **पिरामिडनुमा मीनार** (जिसे विमान कहा जाता है) के **आकार** में है।
- **वाहन-** यह मंदिर के **मुख्य देवता का वाहन** है जिसे **गर्भगृह से पहले** रखा जाता है।
- **अमलक**- पत्थर की एक **डिस्क जैसी** संरचना जो **उत्तर भारतीय शैली** के **शिखर** के **शीर्ष पर** स्थित है।
- **कलश**- **चौड़े मुंह वाला बर्तन** या सजावटी बर्तन-डिजाइन **उत्तर भारतीय मंदिरों में** शिखर को सजाते हैं।
- **अंतराल**- गर्भगृह और मंदिर के मुख्य हॉल (मंडप) के बीच एक **संक्रमण क्षेत्र**
- **जगती**- **बैठने** और **प्रार्थना** करने के लिए एक **ऊंचा मंच** और **उत्तर भारतीय मंदिरों** में **आम** है।

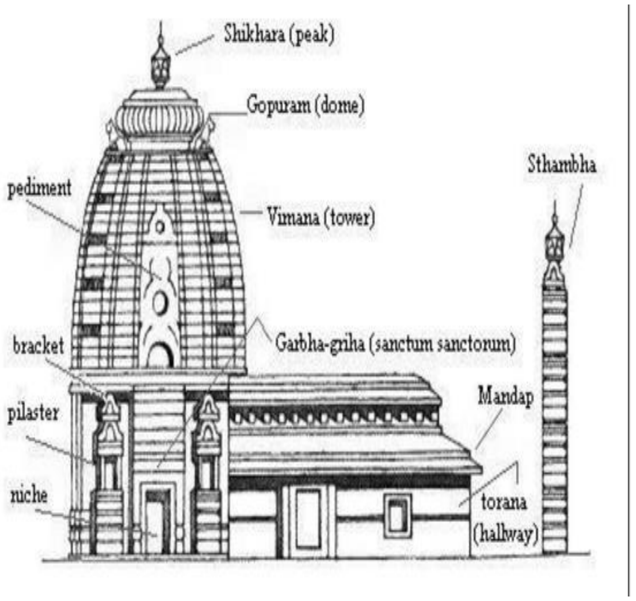

मंदिर स्थापत्य में भग्न ज्यामिति का प्रयोग

- एक योजना की **ज्यामिति एक रेखा से शुरू** होती है जो फिर एक **कोण** बनाती है, फिर **त्रिभुज**, **वर्ग**, **वृत्त** और इसी तरह अंततः **जटिल रूपों** में **परिणत** होती है।
- इस जटिलता का परिणाम **स्व-समानता** होता है ।
- हिंदू मंदिर की योजना **वास्तुपुरुषमंडल** से संबंधित **पुराणों** में **वर्णित सिद्धांतों** का कड़ाई से **पालन** करती है।
- मुख्य रूप से **दो प्रकार के मंडल** होते हैं, एक **चौंसठ वर्गों वाला** होता है और दूसरा **इक्यासी वर्गों वाला** होता है जहाँ प्रत्येक वर्ग **एक देवता को समर्पित** होता है।
- **मुखमंडप**, **अर्धमंडप** और अंत में **महा मंडप** से शुरू होकर, **मूलप्रसाद** आता है, जो **गर्भगृह** को **घेरता** है।
- भग्न का भी **दो आयामों** और **तीन आयामों** दोनों में **मंदिर की ऊंचाई पर** बहुत **प्रभाव** पड़ता है।
- **फ्रैक्टल स्व-समान पसलियों** को बनाकर **अमलाका भाग** में **काम** करता है।
- **भग्न सिद्धांत** "सब के बीच एक, सब एक है" की **हिंदू दार्शनिक अवधारणा** का पूरी तरह से समर्थन करता है। यह "**अराजकता में व्यवस्था**" लाता है और इस प्रकार "**जटिलता में सुंदरता**" लाता है।
- गुजरात के **मोढेरा** में **सूर्य कुंड** भारतीय मंदिरों में **भग्न ज्यामिति** के उपयोग का एक **उत्कृष्ट** उदाहरण है।

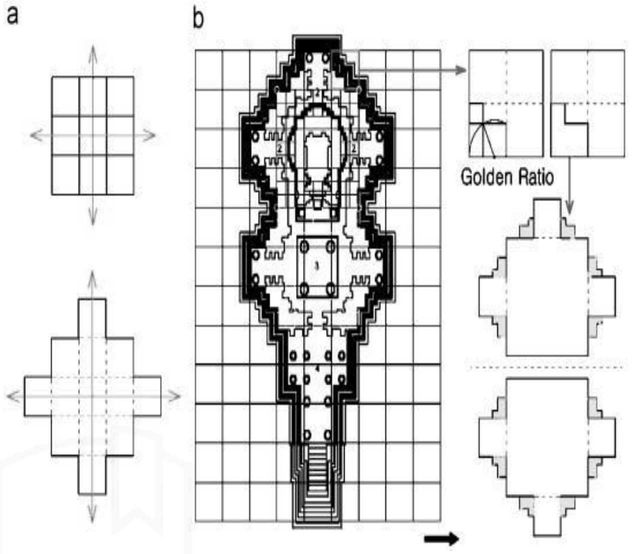

मंदिर वास्तुकला के चरण

पहला चरण-

- **चपटी छत** वाला चौकोर आकार का मंदिर
- **उथले स्तंभ** पर निर्मित
- संरचना को **कम ऊंचाई के मंच** पर बनाया गया था
- **गर्भगृह** मंदिर के **केंद्र में** स्थित होता था
- मंदिर का **एक** ही **प्रवेश द्वार**
- **उदाहरण**- एमपी के एरण में विष्णु वराह मंदिर, कंकली मंदिर, तिगवा और मंदिर नं। सांची में 17.

दूसरा चरण-

- **पूर्व चरण** की ही **विशेषताएं**
- **मंच / वेदी** और अधिक **ऊंची**
- **उदाहरण-** नचना कुठार का पार्वती मंदिर

तीसरा चरण-

- सपाट छतों के स्थान पर **शिखर** (घुमावदार टॉवर) **का उद्भव** हुआ।
- "**नागर शैली**" **मंदिर निर्माण** को मंदिर निर्माण के तीसरे चरण की **सफलता** कहा जाता है।
- **पंचायतन शैली** का आरम्भ
- **उदाहरण**: देवगढ का दशावतार मंदिर**,** ऐहोल का दुर्गा मंदिर

चौथा चरण-
- **तीसरे चरण** की सभी **विशेषताओं** को इस चरण में **आगे बढ़ाया** गया।
- केवल **मुख्य मंदिर** आकार में अधिक **आयताकार** हो गया।
- **उदाहरण**: महाराष्ट्र तेर मंदिर

पांचवा चरण
- बाहर की ओर **उथले आयात्कार किनारों वाले वृत्ताकार मंदिरों** का निर्माण
- **पहले** के **चरणों** की सभी **विशेषताएं** जारी रही
- **उदाहरण**:राजगीर का मनियार मठ

मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ

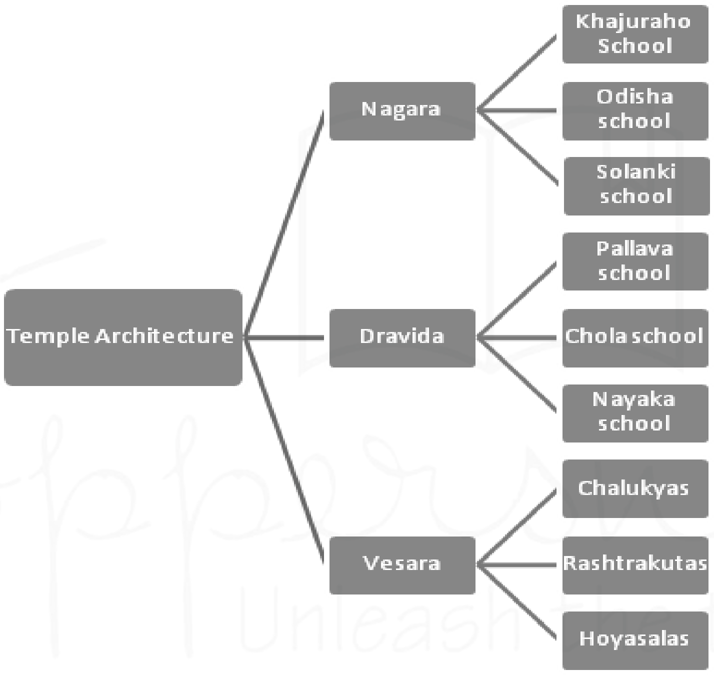

उदभव एवं विकास (100 BC - 1700 / 1800 AD)

नागर शैली	मोर्योत्तर काल → गुप्तकाल→ पूर्वमध्यकाल (100ईसा पूर्व - 300 ईसवी) (319-550 ईसवी) (700-1200 ईसवी)
द्रविण शैली	पल्लव → चोल→ विजयनगर → नायक (7 -9वी सदी) (9-13वी सदी) (14-16वी सदी) (14-18वी सदी)
बेसर शैली	पशिमी चालुक्य → राष्ट्रकट → होयसल (7 -9 वी सदी) (10-12वी सदी) (13-14 सदी)

मंदिरो की नागर शैली
- उत्तर भारत में **हिमालय से विध्य के मध्य** नागर मंदिर मिलते है
- नागर मंदिरों का **निर्माण ऊचे चबूतरे** या **अधिष्ठान** या **जगती** पर किया जाता है।
- इन मंदिरो का **गर्भगृह वर्गाकार** होता है
- **गर्भगृह** के उपर बनी **आकृति शिखर रेखा** या **आर्य शिखर** कहलाती है।
- शिखर को गर्भगृह से उपर की तरफ **वक्राकार** ढंग से बनाया गया है। तथा इसकी **ऊचाई बढ़ती** जाती है।

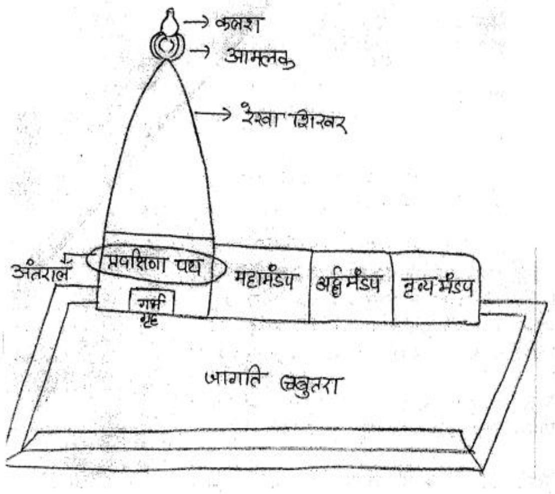

- इसके लिए **गर्भगृह से चारो तरफ प्रक्षेपण आकृति** निकाले जाते है।
- शिखर के **सर्वोच्च भाग** पर **आमलक** (चक्राकार संस्चना या गतिका परिचायक) एव **कलश** बना होता है।
- गर्भगृह के **चारो तरफ अंतराल** होता है जिसका प्रयोग **प्रदक्षिणा पथ** के रूप में किया जाता है।
- बड़े नागर मंदिरों में गर्भगृह के सामने अन्य **सहायक संरचनाये** जैसे- महामण्डप, मण्डप, मधमप, नृत्यगंडप आदि वने होते है।
- कुछ स्थानों पर नागर मंदिर **पंचायतन शैली में बने** होते है जिसके तहत **केद्र** में एक **विशाल मंदिर** तथा **चारो कोनों** पर **सहायक देवी देवताओ के मंदिर** बनाए जाते हैं।
- नागर मंदिरों के **बाहरी भागों** में **आले** (ताखा) **काटकर** अनेक प्रकार की **मूर्तियों** से इन्हें **सजाया** जाता है। इन मूर्तियों में अनेक **देवी देवताओं**, लोकविषयों से संबंधित जैसे **नाग अप्सरा**, **मिथुन**, नृत्य संगीत आदि आम स्त्री पुरुष की **मूर्तिया** बनी होती है। जिन्हें **उत्तर प्रदेश** के देवगढ़ , **कंडरिया महादेव**, **खजुराहों** ,**भुवनेश्वर** आदि मंदिरों में देखा जा सकता है।
- **शिखरों की आकृति के आधार पर** नागर मंदिरों को वर्गीकृत किया जा सकता है-
    - **लैटिना/ रेखाप्रसाद**
        - इसका वर्गाकार आधार होता है।
        - यह **सबसे सरल और सबसे सामान्य प्रकार** है।
        - **ज्यादातर गर्भगृह के लिए इस्तेमाल** किया जाता है।
    - **फमसाना**
        - इसका एक **व्यापक आधार** होता है।
        - लैटिना की तुलना में **ऊंचाई में कम ।**
        - ज्यादातर **मंडप के लिए उपयोग** किया जाता है।
    - **वल्लभी**
        - इसका एक **आयताकार आधार** है
        - छत जो एक **गुंबददार प्रकोष्ट** का निर्माण करती है।
        - **अर्धगोलाकार छतो** के रूप में जाना जाता है।
- **कुछ प्रमुख उदारण**
    - दशावतार मंदिर - देवगढ़ (UP)- विष्णु
    - कंदरिया महादेव - खजुराहो (MP)- शिव
    - लक्ष्मण मंदिर - खजुराहों 'विष्णु
    - लिंगराज मंदिर - भुवनेश्वर -शिव
    - अरसावली मंदिर – आंद्रप्रदेश - सूर्य
- **नागर शैली के अंतर्गत 3 उपशैलियाँ:**

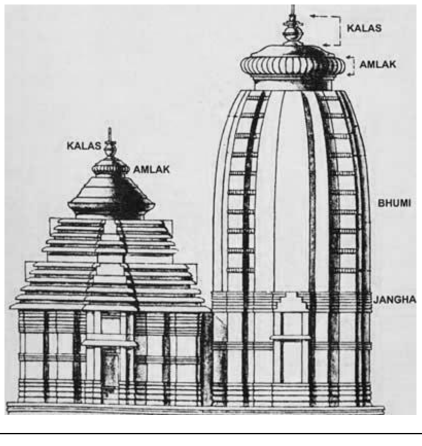

1. **ओडिशा शैली**
    - मंदिर **शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व** करते हैं।
    - ओडिशा में **कलिंग साम्राज्य** के समय में नागर शैली के अन्तर्गत ही ओडिशा मंदिर स्थापत्य शैली का विकास हुआ, जिसमें अनेक **विशेषताएँ** देखने को मिलती हैं, जैसे-